



# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण  
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)  
PART II—Section 3—Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित  
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 189] नई दिल्ली, बुधवार, अप्रैल 25, 1984/वैशाख 5, 1906  
No. 189] NEW DELHI, WEDNESDAY, APRIL 25, 1984/VAISAKHA 5, 1906

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती हैं जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में  
रखा जा सके

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate  
compilation

वित्त मंत्रालय

(राजस्व विभाग)

आदेश

नई दिल्ली, 25 अप्रैल, 1984

का.आ.317(अ) :—म. के.एस. विलीप सिंह जी, प्रशासक, स्वर्ण नियंत्रण अधिनियम, 1968 (1968 का 45) की धारा 115 की उपधारा (1) के साथ पठित धारा 8 की उपधारा (6) तथा धारा 9 की उपधारा (2) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, अपनी यह राय होने पर कि भारत सरकार के वाणिज्य मंत्रालय द्वारा, आयात निर्यात नीति अप्रैल, 1984—मार्च, 1985 के अनुबंध 3 के परिशिष्ट 22 में स्वर्णभूषण निर्यात संपूर्ण स्कीम में, विनिर्दिष्ट विशेष परिस्थितियों में यह अपेक्षित है :—

1. भारतीय स्टेट बैंक की शाखाओं को जिसका गठन भारतीय स्टेट बैंक अधिनियम, 1955 (1955 का 23) के अधीन किया गया है,

(क) प्राथमिक स्वर्ण को क्रय करने या अन्यथा अर्जित करने, स्वीकार करने, या अन्यथा प्राप्त करने के लिए, और

(ख) उक्त स्कीम में निर्दिष्ट अनुज्ञापन प्राधिकारी द्वारा जारी किए गए निकासी आदेश पर अनुज्ञप्त व्योहारी को मानक स्वर्ण शलाकाओं के रूप में ऐसे प्राथमिक स्वर्ण का विक्रय करने, परिधान करने, अस्तित्व करने या अन्यथा व्ययन करने के लिए प्राधिकृत करता है।

2. ऐसे अनुज्ञप्त व्योहारी को, उक्त भारतीय स्टेट बैंक द्वारा इस प्रकार विक्रय किए गए स्वर्ण को क्रय करने या अन्यथा अर्जित करने, स्वीकार करने या अन्यथा प्राप्त करने के लिए प्राधिकृत करता है।

परन्तु अनुज्ञप्त व्योहारी, ऐसे स्वर्ण को किसी अन्य अनुज्ञप्त व्योहारी को विक्रय या अन्यथा व्ययन नहीं करेगा किन्तु -

(क) ऐसे स्वर्ण का उपयोग आभूषणों या वस्तुओं अथवा दोनों को बनाने, विनिर्माण करने, तैयार करने या मरम्मत करने में कर सकता है,

(ख) आभूषणों या वस्तुओं अथवा दोनों को बनाने, विनिर्माण करने, तैयार करने या मरम्मत करने के प्रयोजनार्थ किसी प्रमाणित स्वर्णकार को, एक समय पर 100 ग्राम से अधिक स्वर्ण का विक्रय, परिधान अथवा अन्तरण कर सकता है।

[सं. 1/84 फा. सं. 143/5/84-स्व. नि.-2]

के. एस. दिलीपसिंहजी, प्रशासक

## MINISTRY OF FINANCE

(Department of Revenue)

## ORDER

New Delhi, the 25th April, 1984

S.O. 317 (E) :—In exercise of the powers conferred by sub-section (6) of section 8 and sub-section (2) of section 9 read with sub-section (1) of section 115 of the Gold (Control) Act, 1968 (45 of 1968), I, K.S. Dilipsinhji, Administrator, being of the opinion that the special circumstances specified in the Gold Jewellery Export Replenishment Scheme notified by the Government of India in the Ministry of Commerce and published in Appendix 22-Annexure III to the Import and Export Policy April, 1984—March, 1985, so require, hereby authorise—

(i) the branches of the State Bank of India constituted under the State Bank of India Act, 1955 (23 of 1955), to —

(a) buy or otherwise acquire, accept, or otherwise receive, primary gold ; and

(b) sell, deliver, transfer or otherwise dispose of such primary gold in the form of standard gold bars, to a licensed dealer against the release order issued by the licensing authority referred to in the said Scheme ;

(ii) such licensed dealer to buy or otherwise acquire, accept or otherwise receive the gold so sold by the said State Bank of India :

Provided that the licensed dealer shall not sell or otherwise dispose of such gold to any other licensed dealer but may—

(a) use such gold in the making, manufacturing, preparing or repairing of ornaments or articles or both ;

(b) sell, deliver or transfer such gold, not exceeding 100 grammes, at a time to a certified goldsmith for the purpose of making, manufacturing, preparing or repairing of ornaments or articles or both.

[No. 1/84-F. No. 143/5/84-GC. II]  
K. S. DILIPSINHJI, Administrator